पाठ योजना

महाविद्यालय का नाम — राजकीय महाविद्यालय [illegible], [illegible]
दिनांक — 05-05-2020
कक्षा — स्नातक द्वितीय वर्ष
विषय — इतिहास (Subsidiary)
पाठ — प्लासी के युद्ध के कारण, परिणाम एवं महत्व
घंटी — 3
छात्र का नाम — सुरेश कुमार [illegible]
[illegible] क्रमांक — 34

क्रम संख्या	बिन्दु	छात्र-अध्यापक क्रिया	[illegible]
1	परिणाम	**प्लासी का युद्ध बंगाल के नवाब** सिराजुद्दौला और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच का परिणाम था। 9 अप्रैल 1756 को अलीवर्दी खाँ की मृत्यु हो गई। चूँकि मृत नवाब अलीवर्दी खाँ का कोई पुत्र नहीं था इसलिए उसने अपनी सबसे छोटी बेटी के पुत्र (नाती) सिराजुद्दौला को अपने जीवनकाल में ही उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। अतः अलीवर्दी खाँ की मृत्यु पश्चात 1756 ई० में सिराजुद्दौला बंगाल का नवाब बना। लेकिन नवाब बनने के बाद ही उसे अनेकों विरोधियों का सामना करना पड़ा। नवाब के प्रमुख प्रतिद्वंदी उसकी मौसी घसीटी बेगम, उसका पुत्र शौकत जंग (जो पूर्णिया का नवाब था) तथा उसका दीवान राजवल्लभ थे तथा इन लोगों ने अपने पक्ष में बंगाल के सेनापति मीर जाफर, कलकत्ता के धनी व्यापारी अमीचंद एवं जगत सेठ को भी मिला लिया था। ये सभी सिराजुद्दौला के विनाश पर तुले [illegible]	

Scanned with CamScanner

क्रमांक	शिक्षण बिन्दु	छात्र - अध्यापक क्रिया
		उन्हें गद्दी से हटाकर अपना मनचाहा व्यक्ति नियुक्त करना चाहते थे।
		की उत्तराधिकारियों के सन्दर्भ में सिराजुद्दौला ने उसके पहले अपनी मौसी घसीटी बेगम को कैद कर उनका खजाना जब्त कर लिया और उसके पुत्र शौकतजंग को 16 अक्टूबर 1756 को मनीहारी के युद्ध में पराजित कर मार डाला। अब सिराजुद्दौला आंतरिक स्थिति से मजबूत हो गया और अपना पूरा ध्यान अंग्रेजों की तरफ लगाया।
		अंग्रेज भी अपनी राजनीतिक स्थिति मजबूत कर चुके थे क्योंकि दक्षिण में फ्रांसीसियों पर विजय होने से और बंगाल में व्यापार से उनके हौसले बढ़े हुए थे। अतः अंग्रेज बंगाल की राजनीतिक स्थिति को देखते हुए अपने हित साधन में लगे हुए थे। दूसरी तरफ बंगाल का नवाब सिराजुद्दौला अंग्रेजों से कई बातों को लेकर क्रोधित था।
2.	अंग्रेजों और सिराजुद्दौला के बीच संघर्ष के कारण:-	बंगाल के नवाब और अंग्रेजों के बीच संघर्ष के कई कारण थे —
		① अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला के नवाब बनने पर उसे नजराना नहीं भेजा जिससे सिराज को दुःख हुआ और अपने को अपमानित महसूस किया।
		② अंग्रेज नवाब की आज्ञा की अवहेलना भी करते रहे। वे नवाब के अधिकारियों को भेंट दे कर सारा माल कर बचा लेते और नवाब के कोषागार का धन नहीं देना चाहते थे।

(3) अंग्रेज नवाब के रोकने के बावजूद कलकत्ता एवं अन्य जगहों पर किलेबन्दी करते रहे – जिससे नवाब नाराज था।

(4) अंग्रेजों द्वारा व्यापार में 'दस्तक' के दुरुपयोग से नवाब को आर्थिक क्षति हो रही थी।

(5) अंग्रेज नवाब के विरोधियों, शत्रुओं को शरण दे रहे थे तथा राजनीतिक षड्यंत्रों में उलझाने की अंग्रेजों राजनीतिक अपराधियों को भी अपने यहाँ शरण दे रहे थे। इन्होंने राजवल्लभ के पुत्र कृष्णवल्लभ को अपने यहाँ पनाह दे रखा था। नवाब की आज्ञा के बावजूद उसे वापस नहीं लौटाया।

इन कारणों की वजह से अंग्रेजों और नवाब के बीच संघर्ष होना अनिवार्य हो गया।

प्लासी युद्ध का प्रारम्भ (1757)

मई 1756 में सिराजुद्दौला ने फोर्ट विलियम की किलेबन्दी को गिराने का आदेश दिया जिसे अंग्रेजों ने ठुकरा दिया। फलस्वरूप क्रोधित होकर सिराजुद्दौला ने मई 1756 में कासिमबाजार पर और जून 1756 में फोर्ट विलियम पर अधिकार कर लिया। नवाब की यह बड़ी विजय थी। इस विजय के पश्चात अनेक अंग्रेजों को कैदी बना लिया गया और माणिकचंद को ही कलकत्ता का भार सौंपकर नवाब अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद लौट आया।

फोर्ट विलियम पर अधिकार करने के पश्चात नवाब के अधिकारियों ने 146 अंग्रेज बंदियों

Scanned with CamScanner

को जिनमें स्त्रियाँ और बच्चे भी थे एक छोटे से कमरे में बन्द कर दिया। जून की भयंकर गर्मी के और यातनाओं के चलते उनमें से बंगाली हुकूमत केवल 23 व्यक्ति ही जिंदा बचे और 123 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। इस घटना को लेकर इतिहास में विवाद है और यह माना जाता है कि यह एक किस्सा था अंग्रेज हॉलवेल के दिमाग की उपज मात्र थी।

इस घटना की खबर जब मद्रास पहुँची अंग्रेज फ़ौरन ही नवाब को सबक सिखाने की ठानी। और शीघ्र ही मद्रास से क्लाइव और वाटसन थल और जल सेना लेकर कलकत्ता की ओर बढ़े और कलकत्ता और हुगली पर अधिकार कर लिया। नवाब को बाध्य होकर अंग्रेजों के साथ 9 फरवरी 1757 को अलीनगर की संधि करनी पड़ी जो कि: सिराज नवाब के लिए अपमानजनक थी।

अंग्रेज शुरू से ही ढूँढ रहे थे इस के खिलाफ सिराजुद्दौला को गद्दी से हटाकर उसकी जगह अपने मनचाहे व्यक्ति को नवाब बनाने के लिए षड्यंत्र रचने लगे। क्लाइव ने कुछ बड़े व्यक्तियों दीवान रायदुर्लभ, बैंकर जगतसेठ, व्यापारी अमीचन्द की सहायता नवाब के प्रधान सेनापति मीर जाफर के साथ एक गुप्त संधि कर ली जिसमें मीर जाफर को नवाब बनाने का प्रलोभन अंग्रेजों ने दिया।

अब क्लाइव ने नवाब पर ~~[struck]~~ अलीनगर की संधि भंग करने का आरोप लगाया। इस समय नवाब की स्थिति कमज़ोर थी क्योंकि, अलीनगर की संधि तथा अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण के भय से (जनवरी 1757) कलकत्ते की ~~[struck]~~ कब्ज़ा के अंतर्गत बंगाल की नवाब की कमजोरी भाँपकर क्लाइव ने सेना के साथ आगे बढ़ और 23 जून 1757 को प्लासी के मैदान में क्लाइव और सिराजउद्दौला की सेना के बीच युद्ध हुआ किन्तु सेनापति मीरजाफर के विश्वासघात के कारण सिराजउद्दौला की हार हुई और वह जान बचाकर भागा परंतु मीरजाफर के पुत्र मीरन के मोहम्मद बेग द्वारा उसका कत्ल करवा दिया। इसके साथ ही भारत के राजनैतिक पटल पर ईस्ट इंडिया कंपनी का उदय हुआ जिसने भारतीय इतिहास की दिशा ही बदल दी।

इस युद्ध के पश्चात् जहाँ मीरजाफर को क्लाइव ने बंगाल का नवाब घोषित किया वहीं कंपनी को 24 परगने की जमींदारी प्राप्त हुई; 1758 से 1760 तक के लिए कंपनी को बर्दवान तथा नदिया का कर मिला; क्लाइव को 2 लाख 34 हजार रुपये भेंट स्वरूप मिले; 50 लाख रुपये सेना और नाविकों के लिए मिला तथा बंगाल का और अधिकार कुछ लोगों सुदृढ़ हो गया।

क्रम संख्या	शिक्षण बिन्दु	छात्र अध्याय के प्रश्न
		प्लासी के युद्ध (23 जून 1757) ने भारत के मध्यकालीन युग का अंत कर आधुनिक युग का शुभारंभ कर दिया यहाँ के भारतीय इतिहास को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाने लगा। इस युद्ध के पश्चात बंगाल की गद्दी पर एक ऐसा नवाब आया जो अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली मात्र था। इस युद्ध ने बंगाल में अंग्रेजी सत्ता की स्थापना की प्रक्रिया आरंभ कर दी जो धीरे-धीरे पूरे भारत में फैल गया और भारत गुलामी की ओर बढ़ गया जिससे भारत को 1947 में जाकर छुटकारा मिला।

मुकेश कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक
रामनारायण महाविद्यालय, पंडौल
मधुबनी